एकादश अध्याय

पश्चिमोत्तरी भारत में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः
प्रमुख वर्ग एवं वर्गगत संदर्भो में विचार तथा विश्लेषण

11.1 मात्रा, परिमाण तथा संख्या

11.2 कम या अधिक कार्य का विवेचन

11.3 कार्य का स्वरूप एवं स्तर

11.4 सामान्य निर्णय

इस अध्याय में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न शोध-कार्य का प्रमुख वर्ग एवं वर्गगत संदर्भों में विचार तथा विश्लेषण किया गया है। इसे आगे **4** भागों में विभक्त किया गया है। **1.** मात्रा, परिमाण तथा संख्या, **2.** कम या अधिक कार्य का विवेचन, **3.** कार्य एवं प्रस्तुति का स्वरूप एवं स्तर तथा **4.** सामान्य निर्णय।

11.1 मात्रा, परिमाण तथा संख्या-

विवेच्य विश्वविद्यालयों में इस कालावधि में विभिन्न विषयों तथा विधाओं से सम्बद्ध कुल **1221** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। विवेच्य विश्वविद्यालय हैं-

1. कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

2 कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

3 गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

4 जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

5 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

6 पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

7 महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

8 हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

विवेच्य विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हुए शोध-कार्य की मात्रात्मक स्थिति निम्न तालिका से स्पष्ट होती है।

क्रमांक	विश्वविद्यालय का नाम	शोध-प्रबंधों की संख्या	कुल शोध कार्य का प्रतिशत
1	कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर	**6**	**0.5**
2	कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र	**298**	**24.4**
3	गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर	**165**	**13.5**
4	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू	**28**	**2.3**
5	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़	**239**	**19.6**
6	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला	**90**	**7.4**
7	महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक	**220**	**18.**
8	हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला	**175**	**14.3**
		1221	**100**

विवेच्य तालिका से स्पष्ट होता है कि इन **20** वर्षों में विवेच्य विश्वविद्यालयों में सबसे ज्यादा शोध-कार्य कु क्षेत्र विश्वविद्यालय में हुआ है। यहां पर कुल **298** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। सन् **1991** में **5** शोध-प्रबंध, **1992** में **6** शोध-प्रबंध, **1993** में **9** शोध-प्रबंध, **1994** में **7** शोध-प्रबंध, **1995** में **4** शोध-प्रबंध, **1996** में **10** शोध-प्रबंध, **1997** में **9** शोध-प्रबंध, **1998** में **5** शोध-प्रबंध, **1999** में **7** शोध-प्रबंध, **2000** में **20** शोध-प्रबंध, **2001** में **8** शोध-प्रबंध, **2002** में **38** शोध-प्रबंध, **2003** में **7** शोध-प्रबंध, **2004** में **13** शोध-प्रबंध, **2005** में **34** शोध-प्रबंध, **2006** में **40** शोध-प्रबंध, **2007** में **52** शोध-प्रबंध, **2008** में **10** शोध-प्रबंध, **2009** में **11** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **3** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं।

इसके बाद पंजाब विश्वविद्यालय में कुल **239** शोध-प्रबंध उपल्ब्ध हुए हैं। सन् **1991** में **12** शोध-प्रबंध, **1992** में **27** शोध-प्रबंध, **1993** में **29** शोध-प्रबंध, **1994** में **12** शोध-प्रबंध, **1995** में **15** शोध-प्रबंध, **1996** में **11** शोध-प्रबंध, **1997** में **22** शोध-प्रबंध, **1998** में **12** शोध-प्रबंध, **1999** में **7** शोध-प्रबंध, **2000** में **9** शोध-प्रबंध, **2001** में **15** शोध-प्रबंध, **2002** में **31** शोध-प्रबंध, **2003** में **4** शोध-प्रबंध, **2004** में **6** शोध-प्रबंध, **2005** में **6** शोध-प्रबंध, **2006** में **5** शोध-प्रबंध, **2007** में **5** शोध-प्रबंध, **2008** में **3** शोध-प्रबंध, **2009** में **3** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **5** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में कुल **220** स्वीकृत पीएच. डी. शोध-प्रबंध मिले हैं। सन् **1991** में **5** शोध-प्रबंध, **1992** में **6** शोध-प्रबंध, **1993** में **8** शोध-प्रबंध, **1994** में **9** शोध-प्रबंध, **1995** में **3** शोध-प्रबंध, **1996** में **9** शोध-प्रबंध, **1997** में **7** शोध-प्रबंध, **1998** में **11** शोध-प्रबंध, **1999** में **8** शोध-प्रबंध, **2000** में **6** शोध-प्रबंध, **2001** में **12** शोध-प्रबंध, **2002** में **45** शोध-प्रबंध, **2003** में **10** शोध-प्रबंध, **2004** में **9** शोध-प्रबंध, **2005** में **14** शोध-प्रबंध, **2006** में **12** शोध-प्रबंध, **2007** में **14** शोध-प्रबंध, **2008** में **12** शोध-प्रबंध, **2009** में **17** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **3** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में **175** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। सन् **1991** में **12** शोध-प्रबंध, **1992** में **8** शोध-प्रबंध, **1993** में **10** शोध-प्रबंध, **1994** में **10** शोध-प्रबंध, **1995** में **9** शोध-प्रबंध, **1996** में **12** शोध-प्रबंध, **1997** में **9** शोध-प्रबंध, **1998** में **8** शोध-प्रबंध, **1999** में **10** शोध-प्रबंध, **2000** में **13** शोध-प्रबंध, **2001** में **9** शोध-प्रबंध, **2002** में **13** शोध-प्रबंध, **2003** में **4** शोध-प्रबंध, **2004** में **3** शोध-प्रबंध, **2005** में **2** शोध-प्रबंध, **2006** में **8** शोध-प्रबंध, **2007** में **8** शोध-प्रबंध, **2008** में **11** शोध-प्रबंध, **2009** में **11** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **5** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं।

गु नानक देव विश्वविद्यालय में **165** शोध-प्रबंध हुए हैं। सन् **1991** में **11** शोध-प्रबंध, **1992** में **17** शोध-प्रबंध, **1993** में **15** शोध-प्रबंध, **1994** में **11** शोध-प्रबंध, **1995** में **8** शोध-प्रबंध, **1996** में **7** शोध-प्रबंध, **1997** में **4** शोध-प्रबंध, **1998** में **5** शोध-प्रबंध, **1999** में **11**

शोध-प्रबंध, **2000** में **9** शोध-प्रबंध, **2001** में **13** शोध-प्रबंध, **2002** में **15** शोध-प्रबंध, **2003** में **2** शोध-प्रबंध, **2004** में **5** शोध-प्रबंध, **2005** में **4** शोध-प्रबंध, **2006** में **11** शोध-प्रबंध, **2007** में **8** शोध-प्रबंध, **2008** में **3** शोध-प्रबंध, **2009** में **3** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **3** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं।

पंजाबी विश्वविद्यालय में **90** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। सन् **1991** में **12** शोध-प्रबंध, **1992** में **5** शोध-प्रबंध, **1993** में **9** शोध-प्रबंध, **1994** में **6** शोध-प्रबंध, **1995** में **5** शोध-प्रबंध, **1996** में **3** शोध-प्रबंध, **1998** में **2** शोध-प्रबंध, **1999** में **2** शोध-प्रबंध, **2000** में **2** शोध-प्रबंध, **2001** में **1** शोध-प्रबंध, **2002** में **13** शोध-प्रबंध, **2004** में **1** शोध-प्रबंध, **2005** में **7** शोध-प्रबंध, **2006** में **6** शोध-प्रबंध, **2007** में **1** शोध-प्रबंध, **2008** में **6** शोध-प्रबंध, **2009** में **6** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **3** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं।

जम्मू विश्वविद्यालय में **28** शोध-प्रबंध हुए हैं। सन् **1991** में **2** शोध-प्रबंध, **1992** में **5** शोध-प्रबंध, **1993** में **3** शोध-प्रबंध, **1994** में **1** शोध-प्रबंध, **1996** में **4** शोध-प्रबंध, **1997** में **2** शोध-प्रबंध, **1998** में **2** शोध-प्रबंध, **1999** में **1** शोध-प्रबंध, **2001** में **2** शोध-प्रबंध, **2002** में **2** शोध-प्रबंध, **2007** में **1** शोध-प्रबंध, **2009** में **2** शोध-प्रबंध तथा **2010** में **1** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुआ है।

कश्मीर विश्वविद्यालय में **6** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। **1992** में **1** शोध-प्रबंध, **1995** में **1**, **1998** में **1** शोध-प्रबंध तथा **2002** में **3** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं।

तालिका से पता चलता है कि पश्चिोमत्तरी भारत के इन **8** विश्वविद्यालयों में सन् **1991** से **2010** तक की कालावधि में कुल **1221** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। इस कालावधि में प्राप्त इन शोध-प्रबंधों को विभिन्न वर्गों में विभक्त करके तालिका के द्वारा उनका प्रतिशत निधार्रित किया गया है।

क्रमांक	युग, प्रवत्ति, शाखा आदि	कुल शोध-प्रबंध	कुल शोध-कार्य का प्रतिशत
1	आदिकालीन काव्य	**2**	**0.2**
2	भक्तिकालीन काव्य	**117**	**9.6**
3	रीतिकालीन काव्य	**28**	**2.3**
4	आधुनिक काव्य	**198**	**16.2**
5	कथा-साहित्य	**434**	**35.5**
6	नाटक एवं एकांकी साहित्य	**102**	**8.4**
7	इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर)	**44**	**3.6**
8	भाषा विज्ञान, समीक्षा, लोक साहित्य	**69**	**5.6**
9	विविध साहित्य	**227**	**18.6**
कुल		**1221**	**100**

तालिका से पता चलता है कि विवेच्य विश्वविद्यालयों में इस कालावधि में **1221** शोध-प्रबंधों को शोध का विषय बनाया गया है। इस कालावधि में सर्वाधिक शोध-कार्य कथा-साहित्य और आधुनिक काव्य पर हुआ है। इन दोनों पर कुल **632** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं, जो कि शोध-कार्य का **51.7** प्रतिशत है। कथा-साहित्य संबंधी कुल **434** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं, जो कि शोध-कार्य का **35.5** प्रतिशत है। कथा-साहित्य में भी उपन्यास साहित्य पर **215** शोध-प्रबंध मिले हैं, जो कथा-साहित्य का **49.5** प्रतिशत है तथा कुल शोध-कार्य का **17.6** प्रतिशत है। कथा-साहित्य के सामान्य एवं सैद्धान्तिक विधा पर **141** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं, जो कुल शोध-कार्य

का **11.5** प्रतिशत है। कहानी साहित्य पर **78** शोध-प्रबंध स्वीकृत किए गए हैं, जो कुल शोध-कार्य का **6.4** प्रतिशत है। किसी विशेष युग, वाद, वृति या विधा की निश्चित सीमा में बंध न सकने वाले शोध-कार्य को 'प्रकीर्ण साहित्य' के अंतर्गत परिगणित किया गया है। इस वर्ग में कुल **227** शोध-प्रबंध परिगण्य है, जो कुल शोध-कार्य का **18.6** प्रतिशत है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में आधुनिककालीन काव्य संबंधी **198** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं, जो कुल शोध-कार्य का **16.2** प्रतिशत है। वैज्ञानिक वर्गीकरण करने से ज्ञात होता है कि भारतेन्दुयुग तथा द्विवेदीयुगीन काव्य पर **7**, छायावाद तथा प्रगतिवाद संबंधी **17**, राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा व गीतिकाव्य पर **21**, प्रयोगवाद, नई कविता संबंधी व स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य पर प्रत्यक्षतः **64** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। सामान्य, सैद्धान्तिक व तुलनात्मक रूप से इस विधा पर **89** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं। आधुनिककालीन काव्य शोध-कार्य की दृष्टि से समुन्नत रहा है।

इसके पश्चात् भक्तिकालीन साहित्य आता है। विवेच्य विश्वविद्यालयों में इस कालावधि में भक्तिकालीन काव्य संबंधी कुल **117** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं, जो कुल शोध-कार्य का **9.6** प्रतिशत है। संत-काव्य संबंधी **29**, सूफ़ी-काव्य संबंधी **3**, राम-काव्य संबंधी **11** तथा कृष्ण-काव्य संबंधी **17** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। भक्ति संबंधी सामान्य, सैद्धान्तिक एवं तुलनात्मकता संबंधी **57** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं।

नाटक एवं एकांकी साहित्य पर **102** शोध-प्रबंध मिले हैं, जो कुल शोध-कार्य का **8.4** प्रतिशत है। इनका वैज्ञानिक वर्गीकरण निम्न है- नाटक संबंधी **98**, एकांकी साहित्य संबंधी **2**, रेडीयो नाटक संबंधी **1** तथा नुक्कड़ नाटक संबंधी **1** शोध-प्रबंध प्राप्त हुआ है।

भाषा-विज्ञान, समीक्षा एवं लोक-साहित्य पर उपलब्ध शोध-प्रबंधों की संख्या **69** हैं। यह कुल शोध-कार्य का **5.6** प्रतिशत है। भाषा-विज्ञान पर **15** शोध-प्रबंध, समीक्षा से संबंधी **14** शोध-प्रबंध तथा लोक-साहित्य संबंधी **40** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं।

इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) से संबंधित शोध-प्रबंधों की संख्या **44** है, जो कुल शोध-कार्य का **3.6** प्रतिशत है। निबंध साहित्य संबंधी **18**, पत्रिकाओं

संबंधी **12,** आत्मकथाओं संबंधी **7,** यात्रा साहित्य और साक्षात्कार संबंधी **2-2** तथा जीवनी, डायरी साहित्य और संस्मरण साहित्य संबंधी **1-1** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं।

रीतिकाल संबंधी कुल **28** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं, जो कुल शोध-कार्य का **2.3** प्रतिशत है। इसके अंतर्गत रीतिबद्ध काव्य संबंधी **2** शोध-प्रबंध, रीतिसिद्ध काव्य संबंधी **1** शोध-प्रबंध, रीतिमुक्त काव्य संबंधी **1** शोध-प्रबंध तथा रीतिकाव्य संबंधी सामान्य, सैद्धान्तिक व तुलनात्मक अध्ययन संबंधी **24** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं।

इस काल अवधि में आदिकाल पर बहुत अल्प काम हुआ है। आदिकाल संबंधी मात्र **2** शोध-प्रबंध ही प्राप्त हुए हैं। जो कुल शोध-कार्य का **0.2** प्रतिशत है। यह हैरानी की ही बात है कि साहित्य के एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाग पर शोध-कार्य नगण्य-सा हुआ है। अन्य विधाओं पर भी संख्या की दृष्टि से एक समान कार्य नहीं हुआ है।

11.2 कम या अधिक कार्य का कारण विवेचन-

विवेच्य विश्वविद्यालयों में सम्पन्न शोध-कार्य को विभिन्न वर्गों में विभक्त करने के पश्चात् पता चलता है कि इन वर्गों में शोध-कार्य एक समान नहीं हुआ है। किसी वर्ष में शोध-कार्य अधिक हुआ है तो किसी में बहुत कम। इन विश्वविद्यालयों से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्ष **2002** में **160** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है और **2010** में मात्र **23** शोध-विषयों पर। यही स्थिति विविध वर्गों की है। कथा-साहित्य पर काफी काम हुआ है और आदिकाल पर बहुत कम। कथा-साहित्य पर **434** शोध-प्रबंध मिलते हैं तथा आदिकाल पर केवल **2** शोध-प्रबंध। यदि इन वर्षों में जानकारी के अनुसार प्राप्त शोध-प्रबंधों की संख्या एक समान नहीं है तो इसके पीछे जरूर कोई कारण रहा है। इस उपशीर्षक में इसी विषय पर चर्चा की गई है।

वर्षानुसार वर्गीकरण करने पर ज्ञात होता है कि इन **20** वर्षों में विवेच्य विश्वविद्यालय में औसतन **61** शोध-प्रबंध प्रति वर्ष के हिसाब से कुल **1221** शोध-प्रबंध लिखे गए हैं। इन विश्वविद्यालयों में सन् **2002** का वर्ष शोध-कार्य की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस वर्ष **160** शोधार्थियों का शोध-उपाधि प्राप्त हुई। वर्ष **1991** में **58,** वर्ष **1992** में **75,** वर्ष **1993**

में **83,** वर्ष **1994** में **56,** वर्ष **1995** में **45,** वर्ष **1996** में **56,** वर्ष **1997** में **53,** वर्ष **1998** में **45,** वर्ष **1999** में **47,** वर्ष **2000** में **59,** वर्ष **2001** में **60,** वर्ष **2003** में **27,** वर्ष **2004** में **37,** वर्ष **2005** में **68,** वर्ष **2006** में **81,** वर्ष **2007** में **90,** वर्ष **2008** में **45,** वर्ष **2009** में **53** तथा वर्ष **2010** में **23** शोधार्थियों को शोध-उपाधि प्राप्त हुई है। सन् **2002** में शोध-कार्य अधिक होने के पीछे सम्भवतः यह कारण रहा होगा कि उस समय पीएच. डी. और यू. जी. सी. नेट को एक समान कर दिया गया था। **2009** के बाद महाविद्यालयों में प्राध्यापक के लिए यू. जी. सी. नेट को जरूरी कर दिया था। इसलिए शोधार्थियों का रूझान इस तरफ कम हो गया है।

इस कालावधि में कथा-साहित्य, आधुनिक काल तथा भक्तिकाल पर काफी शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। इन वर्गों में प्राप्त प्रविष्टियों की संख्या क्रमशः **434, 198** तथा **117** है तो दूसरी ओर इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) में **44** तथा आदिकाल के संबंध में मात्र **2** शोध-प्राप्त हुए हैं।

आधुनिक युग विविधता का युग है। साहित्य के संदर्भ में इस युग में विभिन्न विधाएं उभर कर सामने आई है। उनमें से सबसे प्रसिद्ध तथा मनोरंजकदायी विधा है- कथा-साहित्य। यही कारण है कि इस कालावधि में कथा-साहित्य पर सबसे ज्यादा शोध-प्रबंध मिले हैं। कथा-साहित्य से संबंधित शोध-प्रबंधों की संख्या **434** है। कथा-साहित्य में भी उपन्यास विधा पर सबसे अधिक शोध-प्रबंध लिखे गए हैं। इनकी संख्या **215** है। कहानी साहित्य पर मिलने वाले शोध-प्रबंधों की संख्या **78** है। कथा-साहित्य से संबंधित सामान्य, सैद्धान्तिक एवं तुलनात्मक संबंधी शोध-कार्य पर **141** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं।

कथा-साहित्य के लोकप्रिय होने के कारण इस पर अधिक शोध-कार्य हुआ है। दूसरा इससे संबंधित विषय सामग्री प्रचुर मात्रा में मिल जाती है। शोधार्थियों का इस तरफ ज्यादा झुकाव रहता है। यही कारण है कि विवेच्य विश्वविद्यालयों में काफी शोध-प्रबंध मिले हैं।

आधुनिक युग विविधता का युग होने के कारण इसमें गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों विधाओं पर शोध-कार्य करने की संभावनएं रहती है। यही कारण है कि आधुनिक काव्य पर भी काफी मात्रा में शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह हमेशा पुरातनता से

नवीनता की ओर अग्रसर होता है। आधुनिक काव्य के आगे अनेक भाग व क्षेत्र हैं, जिनपर शोध-कार्य करने की संभावनाएं अधिक है। यह एक रोचक विधा है। इस पर साहित्यिक सामग्री भी अच्छी मात्रा में मिल जाती है। छात्रों की चि भी इसमें ज्यादा रहती है।

वह विषय जिसे किसी वाद, युग या विधा की निश्चित सीमा में बांध नहीं कर सकते, उसे प्रकीर्ण साहित्य कहते हैं। प्रकीर्ण साहित्य पर भी काफी शोध-प्रबंध मिलते हैं। इनकी संख्या **227** है। इसमें काफी विविधता होती है, जिसके कारण शोधार्थी को विषय का चयन करने में सुगमता रहती है। विविधता होने के कारण इसमें आगे अनेक शोध के क्षेत्र निकलते हैं। जिसपर शोध-कार्य किया जा सकता है। यही कारण है कि इस पर इतने शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं।

भक्तिकाल मध्यकालीन काव्य से संबंधित होते हुए भी आधुनिक युग में एक लोकप्रिय विधा है। यही कारण है कि विवेच्य विश्वविद्यालयों में भक्तिकाल पर **117** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। भक्तिकालीन साहित्य में भी संत-काव्य संबंधी **29**, सूफ़ी-काव्य संबंधी **3**, राम-काव्य संबंधी **11**, कृष्ण-काव्य संबंधी **17** तथा भक्ति संबंधी सामान्य सैद्धान्तिक एवं तुलनात्मक संबंधी शोध-प्रबंधों की संख्या **57** है। अधिकतर मनुष्यों के हृदय में भक्ति सदैव विराजमान है। भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है। यही कारण है कि शोधार्थियों की चि इसमें आज भी है। इस युग पर इतने शोध-प्रबंध मिलना इसका प्रमाण है।

नाटक एवं एकांकी भी आधुनिक विधाएं हैं। इस संबंधी कुल **102** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। इस विधा के महत्त्व को देखते हुए यह संख्या कम है; यद्यपि हिन्दी नाटक कम लिखे जा रहे हैं। यह भी इसका एक बड़ा कारण हो सकता है। वर्तमान समय में, बड़ी संख्या में कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में नाटक एवं एकांकी को स्वतंत्र विधा के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है। दूसरा नाटक खेलने वाले थियेटर भी बहुत कम हैं और हिन्दी रंगमंच का दायरा सीमित है। फिर भी, इतने शोध-प्रबंध मिलना भी शोधार्थियों की चि दर्शाता है। संभव है भविष्य में इस पर काफी काम हो।

इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) पर मिलने वाले शोध-प्रबंधों की संख्या **44** है। मात्रा की दृष्टि से यह संख्या बहुत थोड़ी है। निबंध पर **18**, पत्रिकाओं संबंधी **12**, आत्मकथाओं संबंधी **7**, यात्रा संबंधी **2**, साक्षात्कार संबंधी **2**, जीवनी, डायरी तथा

संस्मरण संबंधी **1-1** शोध-प्रबंध मिले हैं। ये सभी आधुनिक युग की विधाएं हैं, तथापि इन पर बहुत कम शोध-कार्य हुआ है। कालेज एवं विश्वविद्यालयों में इनको भी अपवाद स्वरूप स्वतंत्र विधा के रूप में पढ़ाया जाता होगा। दूसरा इन विधाओं पर सहायक एवं संदर्भ साहित्य भी बहुत अल्प मिलता है। यही कारण है कि इन पर बहुत कम शोध-कार्य हुआ है। यह क्षेत्र शोधार्थियों से अधिक शोध-कार्य की अपेक्षा करता है।

भाषा-विज्ञान, लोक-साहित्य व समीक्षा पर **69** शोध प्रबंध मिलें हैं। भाषा-विज्ञान संबंधी **15,** लोक-साहित्य संबंधी **40** तथा समीक्षा संबंधी **14** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। मात्रा की दृष्टि से यह भी अल्प कहा जाएगा। इसका कारण सहायक एवं संदर्भ सामग्री का न मिलना तथा परिणाम स्वरूप शोधार्थियों का इनमें चि न लेना हो सकता है। दूसरा लोक-साहित्य संबंधी शोध-कार्य में शोधार्थी को अपने विषय से संबंधित क्षेत्र में फील्ड-कार्य कार्य करने की आवश्यकता होती है। जो साधनों, समय या अन्य कारणों की कमी के कारण सभी शोधार्थियों के लिए संभव नहीं होगा।

रीतिकालीन काव्य पर **28** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। इसका कारण है कि रीति साहित्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है। दूसरा रीति साहित्य अति श्रृंगारिकता व युद्ध से संबंधित होने के कारण समकालीन शोधार्थियों ने इसमें अपनी चि नहीं दिखाई है। इसकी अल्पता का यही कारण है।

आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रथम काल है। विवेच्य विश्वविद्यालयों में इस कालावधि में आदिकाल से संबंधित शोध-प्रबंधों की संख्या केवल **2** हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि साहित्य की इस विधा पर इतना कम शोध-कार्य हुआ है। इसके पीछे शोधार्थियों की चि संबंधी उदासीनता, शोध-सामग्री का कम मिलना तथा प्राप्त सामग्री का प्रमाणित सिद्ध ना होना हो सकता है। शोधार्थी आधुनिक विधाओं की ओर ज्यादा उन्मुख रहें हैं। यही कारण है कि इस विधा पर कम शोध-कार्य हुआ है।

11.3 कार्य एवं प्रस्तुति का स्वरूप एवं स्तर

इसे आगे दो उप-भागों में विभक्त किया गया है। **1.** कार्य का स्वरूप एवं स्तर तथा **2.** प्रस्तुति का स्वरूप एवं स्तर।

11.3.1 कार्य का स्वरूप एवं स्तर-

सन् 1991 से 2010 तक की कालावधि में सम्पन्न शोध-प्रबंधों के अध्ययन से पता चलता है कि कुछ कमियों को छोड़कर ये शोध-प्रबंध शोध-प्रविधि के अनुकूल ही हैं। विवेच्य विश्वविद्यालयों से प्राप्त हुए शोध-प्रबंधों के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है शोध-प्रबंधों की पृष्ठ-संख्या 149 से 1058 तक रही है। एक सामान्य शोध-प्रबंध की पृष्ठ-संख्या 300 से 450 के बीच होती है। कुछ शोध-प्रबंध लघु है तो कुछ बृहत् आकार लिए हुए हैं। इन शोध-प्रबंधों में विषय के अनुसार सिद्धान्तों और कथन का वर्णन किया गया है। कई शोध-प्रबंधों के विषय एक जैसे हैं, अर्थात विषय का दोहराव है। कहीं एक ही विषय पर दो शोधार्थियों ने काम किया है। कहीं-कहीं पर अनावश्क पिष्टपेषण किया गया है, जो शोध गरिमा के अनुरूप नहीं है। कुछ शोध-प्रबंधों में पृष्टांकन व पाद टिप्पणियों संबंधी गलतियां मिलती हैं। कई शोध-प्रबंधों का पृष्ठांकन प्राक्कथन से प्रारम्भ कर लिया गया है। बहुतेरे शोध-प्रबंधों में पाद-टिप्पणी अध्यायों के अंत में दी गई है।

पूर्व (1991 से 2000 तक) के शोध-प्रबंध उतने प्रबंध स्तरीय नहीं हैं जितने पश्चात् (2000 से 2010 तक) के बन गए हैं। कई शोध-प्रबंधों से ज्ञात होता है कि शोधार्थियों ने उतनी मेहनत नहीं की है, जितनी करनी चाहिए। यह केवल उपाधि प्राप्त हेतु किया गया प्रयास लगता है। कई शोध-प्रबंधों में वर्षोल्लेख नहीं किया गया है। कुछ शोध-प्रबंधों में शोधार्थी का नाम मुखपृष्ठ पर नहीं है। इस तरह की उदाहरणों को छोड़कर ज्यादातर शोध-प्रबंध शोध-प्रविधि की गरिमा के अनुरूप हैं।

11.3.2 प्रस्तुति का स्वरूप एवं स्तर-

सर्वेक्षण करने से पता चलता है कि अधिकतर शोध-प्रबंधों में शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करने का प्रयास किया गया है। परन्तु फिर भी इसके अपवाद बहुत से हैं। ज्यादातर शोध-प्रबंधों का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। फिर भी कई शोध-प्रबंधों में शीर्षक व्यतिक्रम में है। शीर्षक पृष्ठ के 2 इंच नीचे होना चाहिए। अगर शीर्षक बड़ा है तो उल्टी समाधि में होना चाहिए। प्रायः यह अभाव अखरता है। कुछ शोध-प्रबंधों का शीर्षक बारीक अक्षरों में दिया गया है, जो अनुचित है। बहुतेरे शोध-प्रबंधों में उपाधि और विश्वविद्यालय उचितक्रम में नहीं है। कई

शोध-प्रबंधों में वर्ष का उल्लेख नहीं किया गया है। यह शोधार्थियों की सबसे बड़ी भूल है। कुछ शोध-प्रबंधों में शोधार्थी का नाम मुखपृष्ठ पर नहीं है। पहले पहल के शोध-प्रबंधों में निर्देशक का नाम भी मुख पृष्ठ पर दिया गया है। आजकल इसका चलन नहीं रहा है। विषय-सूची शोध-प्रविधि के अनुसार है। परन्तु कई शोध-प्रबंधों में विषय-सूची में पृष्ठ-संख्या का विवरण नहीं दिया गया है। अध्यायीकरण ठीक है। पृष्ठांकन के प्रति शोधार्थी सतर्क रहें हैं। फिर भी कई शोध-प्रबंधों में पृष्ठांकन प्राक्कथन से शुरू कर लिया गया है। पाद-टिप्पणी संबंधी भी शोध-प्रविधि के नियमों का पालन नहीं किया गया है। कुछ शोध-प्रबंधों में पाद-टिप्पणी अध्यायों के अंत में दी गई हैं। शोध-प्रबंधों की भाषा सरल तथा सुगठित रही है। पहले **(1991** से **2000** तक**)** के शोध-प्रबंधों का टंकण अस्पष्ट तथा धूमिल है। क्योंकि उस समय के शोध-प्रबंध पुरानी टाईप की मशीन से टंकित किए गए हैं। वर्तमान समय में इलेक्ट्रॉनिक मशीनों व लेज़र प्रिंटिग के कारण टंकण अच्छा हो गया है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां भी कई शोध-प्रबंधों में मिलती है। कई शोध-प्रबंधों में शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। यह दोष प्रायः बहुत अखरता है। ये शोध-संकेत भावी शोधार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी है। इससे उन्हें शोध-विषय चुनने में सुगमता रहती है। संदर्भ-सूची के प्रति शोधार्थी सतर्क रहें हैं। फिर भी कई शोध-प्रबंधों में पुस्तक का नाम पहले दिया गया है। कुछ शोध-प्रबंधों में पुस्तक प्रकाशन वर्ष का उल्लेख नहीं किया गया है। इस कालवधि में प्राप्त शोध-प्रबंधों के अध्ययन से पता चलता है कि कुछ उपवादों को छोड़कर शोध-कार्य का स्वरूप एवं स्तर शोध-प्रविधि के अनुरूप है। पहले **(1991** से **2000** तक**)** के समय में शोध-प्रविधि की पूर्ण जानकारी ना होने के कारण गलतियां रह गई हैं। वर्तमान समय में शोध-प्रविधि की जानकारी बढ़ने के कारण शोध-प्रबंध उत्कृष्ट रूप में लिखे जा रहे हैं।

11.4 सामान्य निर्णय-

इस कालावधि में लिखे गए शोध-प्रबंधों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रतिवर्ष औसतन **61** विधार्थियों को स्वीकृत विषयों पर उपाधि प्रदान की जाती रही है। इस कालावधि में शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों को अपने शोध का आधार बनाया है, जिससे हिन्दी शोध-क्षेत्र में नई उद्भावनाए उभर कर सामने आई है। इससे हिन्दी शोध साहित्य को एक नई दिशा मिली है। विवेच्य

विश्वविद्यालयों में सम्पन्न शोध-कार्य का सर्वेक्षण करने के उपरांत निम्न निष्कर्ष निकल कर सामने आते हैं-

इस अवधि में आदिकाल, रीतिकाल व इतर गद्य साहित्य पर बहुत कम कार्य हुआ है। आदिकाल से संबंधित शोध-प्रबंधों की संख्या केवल **2** है। रीतिकाल संबंधी शोध-प्रबंधों की संख्या **28** है तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) पर **44** शोध-प्रबंध ही मिलें हैं। परिमाण, संख्या तथा मात्रा की दृष्टि से ये विधाएं शोध की दृष्टि से अपेक्षित ही रही हैं। कथा-साहित्य पर सबसे ज्यादा शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं। इनकी संख्या **434** है। यह आधुनिक युग की एक लोकप्रिय विधा के रूप में उभर कर आई है। आधुनिक काव्य पर भी सराहनीय कार्य हुआ है। इनकी संख्या **198** है। भक्तिकाव्य जो हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है, पर भी बहुत शोध-कार्य हुआ है। इनकी संख्या **117** है।

विविध विषयों में प्रकीर्ण साहित्य पर भी काफी शोध का कार्य हुआ है। क्षेत्र विस्तृत होने के कारण इस पर शोध-प्रबंध काफी मिले हैं। इनकी संख्या **227** है। विविध विषयों में भाषा-विज्ञान, समीक्षा व लोक साहित्य पर शोध-कार्य अल्प हुआ है। ये क्षेत्र उपेक्षित रहे हैं।

इन वर्षों में कुछ विधाओं में नवीन दृष्टि से अध्ययन का प्रयास हुआ है। ऐसी सशक्त दृष्टि के रूप में उभर कर आया है- समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, प्रवासी-साहित्य, नारी-विमर्श दलित-विमर्श तथा आदिवासी-विमर्श दृष्टि से अध्ययन। इससे शोध के क्षेत्र में विस्तार हुआ है।

यद्यपि आज हिन्दी शोध-क्षेत्र में शोध-कार्य प्रचुर मात्रा में हो रहा है, तथापि मानक शोध-प्रविधि अपनाकर अभी भी शोध की गरिमा बनाए रखना आज भी अपेक्षित है।